

श्रीः  
श्रीमते रामानुजाय नमः  
श्रीमते निगमान्तमहादेशिकाय नमः  
श्रीगुरुपरनपुराधीशाय श्रीकृष्णाय परब्रह्मणे नमः

श्री मेल्लडुर् नारायणभट्टतिरेः कृतिषु  
॥ श्रीमन्नारायणीये पञ्चत्रिंशं दशकम् ॥

*This document has been prepared by*

*Sunder Kidāmbi*

*with the blessings of*

श्री रङ्गरामानुज महादेशिकन्

*His Holiness śrīmad āṇḍavan śrīraṅgam*

শ্রীঃ

শ্রীমতে রামানুজায় নমঃ

শ্রীমতে নিগমান্তমহাদেশিকায নমঃ

## ॥ শ্রীমন্নारायणीये पञ्चविंशं दशकम् ॥

नरसिंहारतारर्णनम्

স্তম্ভে ঘটয়তো হিরণ্যকশিপোঃ কর্ণৌ সমাচূর্ণয -

ন্বাঘূর্ণজ্জগদগুণকুণ্ডকুহরো ঘোরস্তরাভূদ্রঃ।

শ্ৰুৎরা যং কিল দৈত্যরাজহৃদয়ে পূর্নং কদাপ্যশ্ৰুতং

কম্পঃ কশ্চন সম্পপাত চলিতোহপ্যস্তোজভূর্বিষ্টরাৎ ॥ 25.1 ॥

দৈত্যে দিক্ষু রিসৃষ্টচক্ষুষি মহাসংরম্ভিণি স্তম্ভতঃ

সম্ভুতং ন মৃগাঅকং ন মনুজাকারং রপুস্তে রিভো।

কিং কিং ভীষণমেতদদ্ভুতমিতি ব্যুদ্ভান্তচিভেহসুরে

রিস্বূর্জ্জ্জ্বরলোগ্রোরোমরিকসদ্বর্ষ্মা সমাজ্জম্বথাঃ ॥ 25.2 ॥

তপ্তস্বর্ণসর্পঘূর্ণদতিরক্ষাক্ষং সটাকেসর -

প্রোৎকম্পপ্রনিকুণ্ঠিতাশ্বরমহো জীযাতুরেদং রপুঃ।

র্যাওর্যাপ্তমহাদরীসখমুখং খডেগাগ্ররঞ্জনাহা -

জিহ্বানির্গমদৃশ্যমানসুমহাদংষ্ট্রায়ুগোড্ডামরম্ ॥ 25.3 ॥

উৎসর্পদ্রলিভঙ্গভীষণহনু হ্রস্বস্বরীযস্তর -

গ্রীরং পীররদোম্পশতোদগতনখক্রুংশুদুরোল্লগম্।

র্যোমোল্লজ্জিঘ ঘনামনোপমঘনপ্রধ্বাননির্দ্বারিত -

স্পর্ধালুপ্রকরং নমামি ভরতস্তন্নরসিংহং রপুঃ ॥ 25.4 ॥

নুনং রিষুরযং নিহন্যমুমিতি ভ্রাম্যদগদাভীষণং

দৈত্যেন্দ্রং সমুপাদ্ররন্তমধ্বথা দোর্ভ্যাং পৃথুভ্যামমুম্।

रीरो निर्गलितोऽथ खड्गफलकौ गृह्णन् रिचित्रश्रमान्  
र्यार्बृण्णन् पुनरापपात डुरनग्रासोदयतं व्रामहो ॥ 25.5 ॥

ड्राम्यन्तुं दितिजाधमं पुनरपि प्रोदगृह्य दोर्भ्यां जरां  
द्वारेहथोरुयुगे निपात्य नखरान् ब्युत्थाय रक्फोडुरि।  
निर्भिन्दन्नधिगर्भनिर्भरगलद्रक्तान्धु वद्वोत्सरं  
पायं पायमुदैरयो बह् जगत्संहारिसिंहाररान् ॥ 25.6 ॥

त्यक्त्वा तं हतमाशु रक्तलहरीसिक्तोन्नमद्भ्रमणि  
प्रत्यूत्पत्य समस्तदैत्यपटलीं चाखाद्यमाने व्रथि।  
ड्राम्यद्भूमि रिक्स्पिताम्बुधि कुलं र्यालोलशैलोत्करं  
प्रोत्सर्पत्खचरं चराचरमहो दुःस्थामरस्थां दधौ ॥ 25.7 ॥

तारन् मांसरपाकरालरपुषं घोरान्त्रमालाधरं  
व्रं मध्येसभमिद्वकोपमुषितं दुरारगुराररम्।  
अभ्येतुं न शशाक कोपि डुरने दूरे स्थिता डीररः  
सर्वे शर्ररिरीरुत्सरासर मुखाः प्रत्येकमस्तोषत ॥ 25.8 ॥

डूयोऽप्यम्भतरोषधाम्नि डुरति ब्रम्भाञ्जया बालके  
प्रह्लादे पदयोर्नमत्यपभये कारुण्यडाराकुलः।  
शान्तञ्जुं करमस्य मूर्ध्नि समधाः स्तोत्रैरथोदगायत -  
स्तस्याकामधियोऽपि तेनिथ ररं लोकाय चानुग्रहम् ॥ 25.9 ॥

एरं नाटितरौद्रचेष्टित रिडो श्रितापनीयाभिध -  
श्रुत्यन्तस्फुटगीतसर महिमन्नत्यन्तशुद्धाकृते।  
ततादृड्निखिलोत्तरं पुनरहो कस्त्यां परो लङ्घयेत्  
प्रह्लादप्रिय हे मरुत्पुरपते सर्रामयात्पाहि माम् ॥ 25.10 ॥

॥ इति श्रीमन्नारायणीये पञ्चरिंशत् दशकं समाप्तम् ॥